रस चूसक कीडे

मूंग की पत्तियों, तनो एवं फलियों का रस चूसकर अनेक प्रकार के कीडे फसल को हानि पहुंचाते है। इन कीड़ो की रोकथाम हेतु इमिडाक्लोप्रिड 200 एसएल का 500 मि.ली. मात्रा का प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिये आवश्यकता होने पर दूसरा छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें।

पीत शिरा मोजेक

इस रोग के लक्षण फसल की पत्तियों पर एक महीने के अन्तर्गत दिखाई देने लगते है। फैले हुए पीले धब्बों के रूप में यह रोग दिखाई देता है। यह रोग एक मक्खी के कारण फैलता है। इसके नियंत्रण हेतु मिथाइल डिमेटॉन 0.25 प्रतिशत व मेलाथियोन 0.1 प्रतिशत मात्रा को मिलाकर प्रति हैक्टेयर की दर से 10 दिनों के अन्तराल पर घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये। डायमिथोएट 30 ई.सी. की आधा लीटर मात्रा का प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करना काफी प्रभावी होता है।

तना झुलसा रोग

इस रोग के रोकथाम हेतु 2 ग्राम मैन्कोजेब से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बुवाई करनी चाहिये। बुवाई के 30-35 दिन बाद 2 किलो मैन्कोजेब प्रति हैक्टेयर की दर से 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये।

वित्ती जीवाणु रोग

इस रोग के के लक्षण पत्तियों, तने एवं फलियोंपर छोटे गहरे भूरे धब्बे के रूप में दिखाई देते है, इस रोग के रोकथाम हेतु एरिमाइसीम 200 ग्राम या स्ट्रेप्टोसाइक्लन 50 ग्राम को 500 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

पीलीया रोग

इस रोग के कारण फसल की पत्तियों में पीलापन दिखाई देता है। इस रोग के नियंत्रण हेतु 4 प्रतिशत गन्धक का तेजाब या 0.5 प्रतिशत फैरस सल्फेट का छिड़काव करना चाहिये।

सरसोस्परा पत्ती धब्बा

इस रोग के कारण पौधों के ऊपर छोटे गोल बैंगनी लाल रंग के धब्बे दिखाई देते है। पौधों की पत्तियां, जड़े व अन्य भाग भी सूखने लगते है इसके नियंत्रण हेतु कार्बन्डाजिम की 1 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी में या डाइथेन एम 45 की 2 किलो मात्रा 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये। बीज को 3 ग्राम कैप्टान या 2 ग्राम कार्बेन्डोजिम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बोना चाहिये।

किकल विषाणु रोग

इस रोग के कारण पौधे की पत्तियां सिकुड कर इकठ्ठी सी हो जाती है तथा पौधे पर फलियां बहुत ही कम बनती है इसकी रोकथाम हेतु डाइमिथोएट 30 ई.सी. आधा लीटर अथवा मिथाइल डिमेटन 25 ई.सी. 750 मि.ली. प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिये। जरूरत पड़ने पर 15 दिन बाद दोबारा छिड़काव करना चाहिये।

जीवाणु पत्ती धब्बा, फफूंदी पत्ती धब्बा एवं विषाणु रोग

इन रोगो की रोकथाम के लिए कार्बन्डाजिम 1 ग्राम, स्ट्रेप्टोसाइक्लिन की 0.1 ग्राम एवं मिथाइल डेमेटॉन 25 ई.सी. की एम मिली. मात्रा को प्रति लीटर पानी में एक साथ मिलाकर पर्णीय छिडकाव करना चाहिये।

फसल चक्र

अच्छी पैदावार प्राप्त करने एवं भूमि की उर्वराशक्ति बनाये रखने हेतु उचित फसल चक्र आवश्यक है वर्षा आधारित खेती के लिए मूंग-बाजरा तथा सिंचित क्षेत्रों में मूंग/गेहूं/जीरा/सरसों फसल चक्र अपनाना चाहिये।

बीज उत्पादन

मूंग के बीज उत्पादन हेतु ऐसे खेत चुनने चाहिये जिनमें पिछले मौसम में मूंग नही उगाया गया हो मूंग के लिए निकटवर्ती खेतों से संदूषण को रोकने के लिए फसल के चारों तरफ 10 मीटर की दूरी तक मूंग का दूसरा खेत नहीं होना चाहिये। भूमि की अच्छी तैयारी, उचित खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग, खरपतवार, कीडे एवं बीमारियों के नियंत्रण के साथ साथ समय समय पर अवांछनीय पौधों को निकालते रहना चाहिये तथा फसल पकने पर लाटे को अलग सूखाकर दाना निकाल कर ग्रेडिंग कर लेना चाहिये। बीज में नमी 8-9 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिये। बीज को साफ करके उपचारित कर सूखे स्थान में रख देना चाहिये। इस प्रकार पैदा किये गये बीज को अगले वर्ष बुवाई के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

कटाई एवं गहाई

मूंग की फलिया जब काली पड़ने लगे तथा पौधा सूख जाये तो फसल की कटाई कर लेनी चाहिये। अधिक सूखने पर फलियां चिटकने का डर रहता है। फलियों से बीज को थ्रेसर द्वारा या डंडे द्वारा अलग कर लिया जाता है।

उपज एवं अधिक लाभ

उचित विधियों के प्रयोग द्वारा खेती करने पर मूंग की 7-8 क्विंटल प्रति हैक्टेयर वर्षा आधारित फसल से उपज प्राप्त हो जाती है। एक हैक्टेयर क्षेत्र में मूंग की खेती करने के लिए 18-20 हजार रूपये का खर्च आ जाता है। मूंग का भाव 40 रू. प्रति किलो होने पर 12000/- से 14000/- रूपये प्रति हैक्टेयर शुद्ध लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

GREEN GRAM मूंग

वैज्ञानिक खेती

ग्रामीण विकास विज्ञान समिति (ग्राविस)

3/437, 458, मिल्कमैन कॉलोनी, पाल रोड, जोधपुर - 342008 (राज.)
फोन नं. 0291-2785116, 2785317 फैक्स : 0291-2785116
ईमेल : email@gravis.org.in वैबसाईट : www.gravis.org.in
किसान कॉल सेन्टर 1800 180 1551

परियोजना, मुख्यधारा के कृषि जैव विविधता संरक्षण और कृषि क्षेत्र में उपयोग परिस्थिति की तंत्र सेवाओं को सुनिश्चित करने और कमजोरता को कम करने के लिए

इस परियोजना का उद्देश्य भारत के 4 कृषि-क्षेत्रों में किसान समुदायों की आजीविका में सुधार और पहुंच साझा करने के लिए कृषि और स्थायी उत्पादन में लचीलापन के लिए कृषि जैवविविधता के संरक्षण और उपयोग को मुख्यधारा में लाना है। यहां कई कृषि प्रदर्शन समुदाय आधारित भागीदारी दृष्टिकोणों के माध्यम से किये जाएगें जो मौजुदा फसल विविधता के रख रखाव और कम से कम 14 फसलों की उपयुक्त नई सामग्रियों की शुरूआत और तैनाती का समर्थन करते है। प्रस्तावित विभिन्न दृष्टिकोण में जागरूकता अभियान, बीज, मेले, विविधता मंच, बीज आपूर्ति प्रणालियों को मजबूत करना और सामुदायिक जीन बैंक की स्थापना और लाभ देने में सक्षम बनाती है। यह परियोजना किसानों को विविध समृद्ध समाधानों को अपनाने और लाभ देने में सक्षम बनाती है। यह परियोजना किसानों और समुदायों के साथ सीधे काम करेगी, ताकि वे जलवायु में बदलाव के कारण आने वाली चुनौतियों का सामना कर सकें। इसमें सहभागी फसल मूल्यांकन और उपयुक्त फसल विविधता की पहचान और वैज्ञानिक रूप से ध्वनि प्रमाण के आधार पर विभिन्न प्रकार के अनुकूलन, किसानों और समुदायों द्वारा इसकी पुष्टि शामिल है, जिसमें पुरूषों और महिलाओं के स्वयं सहायता समूह शामिल है। मूल्य संवर्धन के माध्यम से आय और अन्य आजीविका सुधार कार्यो और स्थानीय फसलों और जमीनों से अद्वितीय उत्पाद विकास और प्रभावी बाजार लिंक के माध्यम से उनका व्यावसायिकरण भी मुख्यधारा का समर्थन करेगा। परियोजना कृषि जैवविविधता के संरक्षण और उपयोग के माध्यम से क्षमता निर्माण और महिलाओं के सशक्तिकरण पर विशेष जोर देती है।

मूंग राजस्थान में खरीफ ऋतु में उगायी जाने वाली महत्वपूर्ण दलहनी है। राज्य में इसकी खेती करीब 12 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में की जाती है राज्य में मूंग के सकल क्षेत्रफल का 70 प्रतिशत शुष्क क्षेत्र में पाया जाता है। लेकिन क्षेत्र में मूंग की औसत उपज काफी कम है निम्न उन्नत तकनीकों के प्रयोग द्वारा मूंग की पैदावार को 30 से 50 प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता है।

किस्म	पकने की अवधि (दिनों में)	औसत उपज (कु./ है.)	विशेषतायें
जी.एम. - 4	65-68	10-12	फलियाँ एक साथ पकती है दाने हरे रंग के तथा बड़े आकार के होते है।
एस.एम.एल. - 668	65-70	8-9	खरीफ एवं जायद मौसम के लिए उपयुक्त, अनेक बीमारी तथा रोगों के प्रति सहनशील एवं पीत शिरा व बैक्टीरियल ब्लाइट का प्रकोप कम।
आर.एम.जी. - 344	65-70	7-9	खरीफ एवं जायद के लिए उपयुक्त, ब्लाइट के प्रति सहनशील क्षमता वाली तथा चमकदार व मोटे दाने वाली।
आर.एम.जी. - 62	65-70	8-9	सिंचित व असिंचित क्षेत्र के लिए उपयुक्त, राइजोक्टोनिया ब्लाउट, कोण व फली छेदक कीट के प्रतिरोधक तथा इस किस्म की फलियाँ एक साथ पकती है।
आर.एम.जी. - 268	62-70	8-9	सूखा प्रतिरोधी, इस किस्म पर रोग व कीटों का प्रकोप कम तथा मुख्य विशेषता एक साथ पकना।
धीरासर मूंग	65-70	8-10	यह मूंग कम पानी में अधिक उत्पादन 8-10 क्वि./है. पैदा करती है।

देशी मूंग

देशी मूंग को पश्चिमी राजस्थान के कुछ जगह जैसे धोक, धीरासर (बाड़मेर) में परम्परागत तरीके से उगायी जाती है यह मूंग कम पानी में अधिक उत्पादन 8-10 (कु./है.) पैदा करती है दाने हरे रंग के तथा चमकदार बड़े आकार के होते है। सूखा प्रतिरोधी, इस किस्म पर रोग व कीटों का प्रकोप कम कम। इसमें सबसे ज्यादा प्रोटीन पाया जाता है देशी मूंग के पकोड़े व हलवा बहुत ही स्वादिष्ट होते है तथा इस मूंग की दाल, नमकीन भी स्वादिष्ट होती है।

भूमि एवं तैयारी

मूंग की खेती के लिए दोमट एवं बलुई दोमट भूमि सर्वोत्तम होती है। भूमि में उचित जल निकास की उचित व्यवस्था होनी चाहिये। पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल या डिस्क हैरो चलाकर करनी चाहिये तथा फिर एक क्रॉस जुताई हैरो से एवं एक जुताई कल्टीवेटर से कर पाटा लगाकर भूमि समतल कर देनी चाहिये।

बीज एवं बुवाई

मूंग की बुवाई 15 जुलाई तक कर देनी चाहिए। देरी से वर्षा होने पर शीघ्र पकने वाली किस्मों की बुवाई 30 जुलाई तक की जा सकती है। स्वस्थ एवं अच्छी गुणवत्ता वाली तथा उपचारित बीज बुवाई के काम लेना चाहिये। बुवाई कतारों में करनी चाहिये। कतारों के बीच की दूरी 45 से.मी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेन्टीमीटर उचित होती है।

खाद एवं उर्वरक

दलहनी फसल होने के कारण मूंग को कम नाइट्रोजन की आवश्यकता होती है। मूंग के लिए 20 किलो नाइट्रोजन तथा 40 किलो फास्फोरस प्रति हैक्टेयर की आवश्यकता होती है। नाइट्रोजन एवं फास्फोरस की समस्त मात्रा 87 किग्रा डी.ए.पी. एवं 10 किग्रा यूरिया के द्वारा बुवाई के समय देनी चाहिये।

मूंग की खेती हेतु खेत में दो तीन वर्षो में कम से कम एक बार 5 से 10 टन सड़ी हुई गोबर या कम्पोस्ट खाद देनी चाहिये। इसके अतिरिक्त 600 ग्राम रोइजोबियम कल्चर को एक लीटर पानी में 250 ग्राम गुड़ के साथ गर्म कर ठंडा होने पर बीज को उपचारित कर छाया में सुखा लेना चाहिये तथा बुवाई कर देनी चाहिये। खाद एवं उर्वरकों के प्रयोग से पहले मिट्टी की जांच कर लेनी चाहिये।

खरपतवार नियंत्रण

फसल की बुवाई के एक या दो दिन पश्चात एक पेन्डीमैथालीन (स्टोम्प) की बाजार में उपलब्ध 3.30 लीटर मात्रा को 500 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिये। फसल जब 25 - 30 दिन की हो जाये तो एक गड़ाई कस्सी से कर देनी चाहिये या इमेजीथाइपर (परसूट) की 750 मि.ली. मात्रा प्रति हैक्टेयर की दर से पानी में घोल बनाकर छिडकाव कर देना चाहिये।

रोग एवं कीट नियंत्रण :

दीमक

दीमक फसल के पौधों की जड़ों को खाकर नुकसान पहुंचाती है। बुवाई से पहले अन्तिम जुताई के समय खेत में नीम की खली, क्यूनालफोस 1.5 प्रतिशत या क्लोरोपाइरोफोस पाउडर की 20 से 25 किलो मात्रा प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित कर बोना चाहिये।

कातरा

कातरा का प्रकोप विशेष रूप से दलहनी फसलों में बहुत होता है इस कीट की लट पौधों को आरम्भिक अवस्था में काटकर बहुत नुकसान पहुँचाती है इसके नियंत्रण हेतु खेत के आस पास कचरा नहीं रहना चाहिये। कातरे की लटों पर क्यूनालफास 1.5 प्रतिशत पाउडर की एवं चूल्हे की कन्डे वाली राख 20-25 किलो मात्रा प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव कर देनी चाहिये।

मोयला, सफेद मक्खी एवं हरा तेला

ये सभी कीट मूंग की फसल को बहुत नुकसान पहुंचाते है। इनकी रोकथाम के लिये मोनोक्रोटोफास 36 डब्ल्यू एस.सी. या मिथाइल डिमेटान या डाईमिथोएट 30 ई.सी. आधा लीटर या मैलाथियोन 50 इ.सी. 1.25 लीटर को प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिये। आवश्यकतानुसार अमृत पानी भी मूत्र का छिड़काव किया जा सकता है।

पत्ती बीटल

इस कीट के नियंत्रण के लिये क्यूनलफॉस 1.5 प्रतिशत पाउडर की 20-25 किग्रा मात्रा का प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव कर देना चहिये।

फली छेदक

फली छेदक को नियन्त्रित करने के लिए मोनोक्रोटोफास आधा लीटर या मैलाथियोन या क्यूनालफॉस की एक लीटर मात्रा को प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव या क्यूनालफास 1.5 प्रतिशत पाउडर की 20-25 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव करना चाहिये आवश्यकता होने पर 15 दिन के अन्दर दोबारा छिड़काव / भुरकाव किया जा सकता है।